6

भगवद्गीता

भगवद् गीता अर्जुन और उनके सारथी कृष्ण के बीच संवाद है। अर्जुन को आध्यात्मिक और भौतिक ज्ञान प्रदान करने के बाद कृष्ण कर्म, आत्मा, परमात्मा, योग के उद्देश्य, आत्म और भौतिक शरीर में विभेद, बाहरी पर्यावरण का हमारी चेतना पर प्रभाव तथा कैसे जीवन को उत्तम बना सकते हैं, आदि विषयों की व्याख्या करते हैं।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे–

- इस पाठ के श्लोकों का शुद्ध संस्कृत में उच्चारण कर पाने में; और
- श्लोकों के मुख्य पदों का अपने शब्दों में अर्थ बता पाने में।

6.1 भगवद्गीता – 12वां अध्याय

भगवद्गीता मूल्य और जीवन संवर्धन के मूल्यों से युक्त एक पवित्र ग्रंथ है। 12वें अध्याय में भी इसी तरह के मूल्य बताये गये हैं। इनमें से बहुत की विशेषताएं हमारे बीच के लोगों जैसे माता–पिता, अध्यापक, भाई–बहन, रिश्तेदार, दोस्तों, घर का कामकाज करने वालों, किसानों और सरकारी कर्मियों आदि में हम देख सकते हैं।

इन सब जीवन-मूल्यों का समावेशन इन श्लोकों में किया गया है। हम उन श्लोकों का उच्चारण करना और ईश्वर समानार्थ इनका पाठ करने की कोशिश करते हैं।

चूंकि गीता "कृष्ण और अर्जुन" के मध्य संवाद रूप में है, शुरु में अर्जुन कृष्ण से पूछते हैं कि उत्तम भक्त कौन होता है? आपसे कौन सर्वाधिक प्रेम भाव रखता है? कृष्ण उत्तर देते हैं कि जो मुझे सगुण अथवा निर्गुण समझ कर मेरी पूजा करते हैं। मैं दोनों से प्रेम करता हूँ। यह प्रेम उसी तरह है जैसे एक माँ अपने सभी बच्चों से प्यार करती है चाहे वो छोटे हों या बड़े। क्या आपको आपकी मां समान भाव से प्रेम नहीं करती है? इसी तरह से मैं अपने सभी भक्तों से प्रेम करता हूँ।

6.2 श्लोक 1-12

12वां अध्याय/भक्तियोग।

vFk }kn'kks·è;k;%A Hkfä;ksx%
vtZqu mokpA

,oa lrr;qäk ;s HkäkLRoka i;Zqiklrs A
;s pkI;{kje0;äa r"kka ds ;ksxfoÙkek %AA12&1AA

अर्जुन ने कहा-

जो अनन्य भक्तगण सब प्रकार से लगातार आपके स्मरण में लगे रहकर आपके सगुण रूप को और अन्य जो केवल अविनाशी सच्चिदानन्द निराकार रूप से सर्वोच्च भाव से मानते हैं-उन दोनों प्रकार के भक्तगणों में से उत्तम योगवेता कौन हैं?

JhHkxokuqokpA

e¸;kos'; euks ;s eka fuR;;qäk mikl rsA
J);k ij;ksisrkLrs es ;qärek erk%AA12&2AA

भगवन ने कहा–

मुझ में मन को एकाग्र करके लगातार मेरी उपासना में लगे हुए जो भक्तगण अपनी श्रेष्ठ श्रद्धा से युक्त होकर मेरे सगुण रूप की उपासना करते हैं, वे मुझे योगियों में उत्तम योगी स्वीकार हैं।

;s RoO{kjefunsZ';eO;äa i;qZikl rsA
loZ=xefpUR;¥p dwVLFkepyUèkqoeAA12&3AA

lfUu;E;sfUæ;xkea loZ= lec);% A
rs çkIuqofUr ekeso loZHkwrfgrs jrk%AA12&4AA

परंतु जो अपनी इन्द्रियों को संयमित करके मन–बुद्धि से परे सर्व जगत् व्यापी, स्वरूप, सदा एक रस रहने वाले, नित्य रूप, अचल, निराकार और अविनाशी सच्चिादानन्द स्वरूप को निरंतर समभाव से स्मरण करते हुए भजते हैं, ऐसे सम्पूर्ण भूतों के हित में रत और सब स्थिति में समभाव वाले योगी मुझको ही प्राप्त करते हैं।

Dys'kks·fèkdrjLrs"kkeO;äklä psrlkeA
vO;äk fg xfrnq%[k ngofnHkjokI;rsAA12&5AA

सच्चिदानन्द निराकार ब्रह्म में विश्वास रखने वाले, आसक्त चित्तवाले भक्तों के साधन (उपासना साधन) में परिश्रम अधिक है क्योंकि देहाभिमानियों द्वारा अव्यक्तविषपक मति दु:खपूर्वक प्राप्त की जाती है।

;s rq lokZf.k deZkf.k ef; laU;L; eRijk%A
vuU;susuo ;ksxsu eka è;k;Ur mikl rsAA12&6AA

rs"kkega leq)rkZ eR;q lalkjlkxjkrA
Hkokfe ufpjkRikFkZ e¸;kosf'krpsr lkeAA12&7AA

परंतु जो मेरे भक्तगण अपने संपूर्ण कर्मों को मुझमें अर्पण करके मेरे सगुण रूप का ही अतिश्रेष्ठ भावपूर्वक भक्तियोग से निरंतर स्मरण करते हुए उपासना में लीन रहते हैं। हे अर्जुन ! ऐसे उन भक्तगणों को जो मुझमें चित्त लगाते हैं, उनका मैं शीघ्र ही इस मृत्यु रूप संसार सागर से उद्धार करता हूँ।

e¸;so eu vkèkRLo ef; cqÇ) fuos'k;A
fuofl";fl e¸;so vr Åèoa u la'k;%AA 12&8AA

हे अर्जुन ! तू मुझ में ही अपने मन बुद्धि दोनों का लगा, इसके बाद तू मुझमें ही निवास करेगा। इसमें कोई संशय नहीं है।

vFk fpÙka lekèkkrqa u 'kDuksf"k ef; fLFkje~A
vH;kl;kxsu rrk ekfePNkIrqa èku¥t;AA 12&9AA

हे अर्जुन ! यदि तुम्हें लगता है कि तुम चित्त को मुझमें अचल स्थिर करने में समाधान नहीं देख पा रहे हो तो योग से (अभ्साय से) मुझको प्राप्त करने की इच्छा कर।

vH;kls·I;leFkksZ·fl eRdeZijeks HkoA
enFkZefi dekZf.k dqoZfUlf)eokIL;flAA12&10AA

हे अर्जुन तुझे लगता है कि अभ्यास (योग) में भी असमर्थ है तो केवल कर्म करने के लिए ही उद्यत हो जा। इस प्रकार मेरे निमित जो कर्म हैं, उनको करता हुआ भी मेरी प्राप्ति स्वरूप सिद्धि को प्राप्त होगा।

vFkSrnI;'kDrks·fl drqZ e|ksxekfJr%A
loZdeZQyR;kxa rr% dq# ;rkReokuAA12&11AA

हे अर्जुन ! यदि मेरे प्राप्ति स्वरूप सिद्धि को प्राप्त करने में उपर्युक्त साधन को करने में भी तू असमर्थ है, तो अपने आप पर विजय प्राप्त करके (मन बुद्धि पर विजय) सभी कर्मों के फल का त्याग कर।

J;k fg KkueH;klkTKkuk) ;kua fof'k";rA
è;kukRdeQyR;kxLR;kxkPNkfUrjuUrjeAA12&12AA

हे अर्जुन ! मर्म को न समझते हुए किए गये अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से युक्त परमेश्वर के रूप का स्मरण श्रेष्ठ है, और स्मरण से सभी कर्मों के फल का त्याग श्रेष्ठ है, क्योंकि त्याग से शीर्घ ही मेरी प्राप्ति होती है।

पाठगत प्रश्न 6.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. एवं सततयुक्ता ये .... पर्युपासते ।
2. अभ्यासयोगेन ततो .... धनञ्जय।

6.3 श्लोक 13-20

v}"Vk loZHkrkuka e=% d#.k ,o pA
fueZek fujg³dkj% len%[kl[k% {kehAA12&13AA

lUr"V% lrra ;kxh ;rkRek n<fu'p;%A
e¸;Æireukcf);ks enHkä% l es fç;%AA12&14AA

हे अर्जुन ! जो भक्तगण सभी भूतों में द्वेष भाव से रहित, स्वार्थ से परे रहकर सभी से प्यार करता है और बिना किसी चाहत के दयालु है तथा जो ममत्व से रहित है, अहंकार से परे है, सु:ख दु:ख में समभाव है, क्षमाशील है, स्वभाव में संतोषी है, मनेन्द्रियों को वश में करने वाला संयमित योगी जो मन में दृढ़ निश्चय करने वाला है, वह मन, बुद्धि को मुझमें अर्पण करने वाला मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

;LekUukf}tr ykdk ykdkUukf}tr p ;%A
g"kke"kHk;k}xeqäk ;% l p es fç;%AA12&15AA

ऐसा भक्त जिससे कोई भी अन्य जीव उद्वेग को प्राप्त नहीं करता और स्वयं भी किसी अन्य जीव से उद्वेग को प्राप्त नहीं करता है, जो हर्ष और अमर्ष, भय और उद्वेगादि से परे है, ऐसा मेरा भक्त मुझे बहुत प्रिय है।

अमर्ष दूसरे की प्रगति और खुशी को देखकर दु:खी होता है।

vui{k% 'kfpn{k mnklhuk xr0;Fk%A
lokjEHkifjR;kxh ;k enHkä% l e fç;%AA12&16AA

जो भक्तगण इच्छा से परे है, बाह्य रूप और अन्तर्मन से शुद्ध, चलाकी और पक्षपात जैसे दुर्गणों से रहित है, दु:खों से उदासीन, वह सब का परित्यागी भक्त मुझे प्रिय है।

;k u â";fr u }f"V u 'kkpfr u dk³{kfrA
'kHkk'kHkifjR;kxh Hkfäeku;% l e fç;%AA12&17AA

जो कभी न बहुत हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न दु:ख करता है, न इच्छा करता है, और जो समस्त शुभ और अशुभ कार्यों का परित्यागी है ऐसा भक्त मुझे बहुत प्रिय है।

le% 'k=k p fe= p rFkk ekukieku;k%A
'khrk".kl[kn%[k"k le% l³xfooftr%AA12&18AA

rY;fuUnkLrfreksZuh lUrq"Vks ;u dsufprA
vfudsr% fLFkjefrHkZfäekUes fç;k uj%AA12&19AA

जो शत्रुता और मित्रता में समभाव है। जो आदर और अनादर में भी समभाव है। सर्दी, गर्मी, सुख और दुःखों में द्वन्द्व में समभाव है और आसक्ति से रहित है। जो, निंदा और प्रशंसा को समभाव से देखता है। चिंतनशील है, शरीर निर्वाह (जीवन जीने में) में संतुष्ट है, निवास के स्थान में ममत्व और आसक्ति से रहित है, ऐसा स्थिर, बुद्धि वाला भक्त मुझे बहुत प्रिय है।

;s rq èkEk;ke`rfena ;FkksDra i;qikIrsA
Jí/kkuk eRijek HkäkLrs·rho es fç;k%AA12&20AA

परंतु हे अर्जुन ! जो श्रद्धा युक्त भक्त मेरे अधीन होकर उपर्युक्त धर्मस्वरूप अमृत का (अमृत वचनों का) निस्वार्थ भाव से पालन करते हैं ऐसे भक्तगण मुझे सर्वाधिक प्रिय हैं।

Å¡ rRlfnfr JhenHkxonxhrklqifu"kRlq czãfo|k;ka ;ksx'kkL=s
Jhd".kktqZulokns Hkfä;ksxks uke }kn'kks·è;k;%AA12AA

पाठगत प्रश्न 6.2

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
   शीतोष्णसुखदुःखेषु समः .....।।

2. सन्तुष्टः सततं योगी..... ।
   मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।

आपने क्या सीखा

- कृष्ण के प्रिय भक्तों की विशेषताएं।
- समभाव की भावना।

पाठांत प्रश्न

1. भगवद्गीता के 12वें अध्याय में भगवान कृष्ण द्वारा दी गई शिक्षाओं को अपने शब्दों में लिखिए।
2. भगवान कृष्ण ने अपने तक पहुँचने (प्राप्ति) के लिए क्या-क्या शिक्षाएं दी।
3. ऐसी कौन सी विशेषताएं हैं जो सभी मनुष्यों में होने चाहिए।

उत्तरमाला

6.1

1. भक्तास्त्वां
2. मामिच्छाप्तुं

टिप्पणी

6.2

1. सङ्गानिवार्जित
2. यतात्मा दृढनिश्चयः